eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Vol. 01, Issue 02, Jan 2022

भारत अमेरिका परमाणु संबन्धः परमाणु करार 123 एवं भारतीय विदेश नीति

[1]डॉ0 अरविन्द कुमार शुक्ल
[1]असिस्टेंट प्रोफेसर, राजनीति विज्ञान, राजकीय महिला स्ना0 महाविद्यालय, बिंदकी फ़तेहपुर उ0प्र0

Abstract

अमेरिका लंबे समय से भारत को गुटनिरपेक्ष खेमे (गुटनिरपेक्ष आंदोलन) का नेता मानता रहा और यह मानता था कि वह USSR की ओर तथा बाद में रूस की ओर रुख कर रहा है। भारत ने अपने अधिकांश हथियार रूस से खरीदे और उसके पास समाजवादी आर्थिक शासन था। शीत युद्ध के दौरान और उसके बाद के वर्षों में अमेरिका का झुकाव पाकिस्तान की ओर रहा। हालाँकि चीन के उदय के बाद जॉर्ज डब्ल्यू बुश प्रशासन (US) ने भारत को पश्चिम के खेमे में शामिल करने और चीन को नियंत्रित करने में मदद के लिये इसे आकर्षित करने का फैसला किया। इसलिये अमेरिका ने भारत को असैन्य परमाणु प्रौद्योगिकी और यूरेनियम तक पहुँच की पेशकश की, वह ईंधन जो उसके परमाणु ऊर्जा रिएक्टरों के लिये आवश्यक था। तब भारत सरकार 123 समझौते (यू.एस.–भारत असैनिक परमाणु समझौत 123) पर हस्ताक्षर करने के लिये सहमत हुई।

शब्द संक्षेप– भारत, अमेरिका, परमाणु संबन्ध, परमाणु करार, एवं भारतीय विदेश नीति।

Introduction

वर्ष 2008 में भारत–अमेरिका परमाणु सहयोग समझौते पर हस्ताक्षर किये गए, जिसने दोनों देशों के बीच संबंधों को बढ़ावा दिया, जो तब से मज़बूती से आगे बढ़ रहे हैं। भारत–अमेरिका परमाणु समझौते का एक प्रमुख पहलू यह था कि परमाणु आपूर्तिकर्त्ता समूह ने भारत को एक विशेष छूट दी, जिसने उसे एक दर्जन देशों के साथ सहयोग समझौतों पर हस्ताक्षर करने में सक्षम बनाया। इसने भारत को अपने नागरिक और सैन्य कार्यक्रमों को अलग करने में सक्षम बनाया तथा अपनी असैनिक परमाणु सुविधाओं को अंतर्राष्ट्रीय परमाणु ऊर्जा एजेंसी के सुरक्षा उपायों के तहत रखा।

यह भारत को उन राज्यों के संवर्द्धन और उन्हें पुनर्संसाधन प्रौद्योगिकियों के हस्तांतरण से रोकता है जो कि उनके पास नहीं हैं तथा भारत को उनके प्रसार को सीमित करने के अंतर्राष्ट्रीय प्रयासों का भी समर्थन करना चाहिये। बाद में भारत ने अमेरिका, फ्राँस, रूस, कनाडा, अर्जेंटीना, ऑस्ट्रेलिया, श्रीलंका, यूनाइटेड किंगड, मजापान, वियतनाम, बांग्लादेश, कज़ाखस्तान और कोरिया के साथ शांतिपूर्ण उपयोग के लिये परमाणु सहयोग समझौतों पर हस्ताक्षर किये। इसके बाद फ्राँस, कज़ाखस्तान, ऑस्ट्रेलिया, कनाडा और रूस से यूरेनियम के आयात के लिये विशिष्ट समझौते हुए हैं। इसने भारत को मज़बूत अप्रसार साख के साथ एक ज़िम्मेदार परमाणु हथियार राज्य होने की मान्यता दी।

इसने दोनों देशों के बीच संबंधों को बढ़ावा दिया। इसने सैन्य सहयोग को भी बढ़ावा दिया जिससे रक्षा व्यापार का विस्तार हुआ; इसमें वर्ष 2014 के बाद से नवीकरणीय प्रौद्योगिकी सहित ऊर्जा सहयोग में वृद्धि शामिल है। तकनीकी विकास के अर्तगत भारत ने दबावयुक्त भारी जल रिएक्टर' (Pressurized Heavy Water Reactor& PHWR) विकसित किये, जो वर्तमान में भारतीय परमाणु ऊर्जा उत्पादन की रीढ़ हैं। PHWR एक परमाणु ऊर्जा रिएक्टर है, जो आमतौर पर अपने ईंधन के रूप में गैर–समृद्ध

eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Vol. 01, Issue 02, Jan 2022

प्राकृतिक यूरेनियम का उपयोग करता है। यह अपने शीतलक और मॉडरेटर के रूप में भारी पानी (ड्यूटेरियम ऑक्साइड D2O) का उपयोग करता है। यूरेनियम आयात में वृद्धि हुई– भारत–अमेरिका परमाणु समझौते ने भारत को विभिन्न देशों से यूरेनियम आयात करने में सक्षम बनाया।

वेस्टिंगहाउस को वर्ष 2008–09 में वित्तीय संकट का सामना करना पड़ा। इसके बीच वेस्टिंगहाउस के नए खरीदारों ने पहले ही भारत में व्यवस्था को कमज़ोर कर दिया है। वे भारत में परमाणु ऊर्जा परियोजना का निर्माण नहीं करेंगे और केवल रिएक्टरों तथा घटकों की आपूर्ति करेंगे, जिसके कारण भारत में एक रिएक्टर के निर्माण में लगभग 10 वर्ष लगेंगे। इसे देखते हुए भारत में फुकुशिमा–प्रकार (Fukushima&Type) की परमाणु दुर्घटना के मामले में अमेरिकी कंपनियाँ जो दायित्व वहन करेंगी, वह अत्यधिक अनिश्चित है।

प्राक्कल्पना -

1– भारत अमेरिका परमाणु संबन्ध के द्वारा अपनी अर्थव्यवस्था को गतिशील बनाये रख सकता है।
2– अंतर्राष्ट्रीय जगत को भारत प्रभावित करेगा और भारत अमेरिका परमाणु संबन्ध से भारत को सुरक्षा परिषद की स्थायी सदस्यता प्राप्त करने में सहायता मिल सकती है।
3– इस समझौते से भारत के उर्जा हितों का संरक्षण होगा।
4– इस समझौते से भारत को नाभिकीय ईंधन की आपूर्ति निर्बाध रुप से बिना अपनी संम्प्रभुता अथवा अपनी परमाण सुरक्षा/परमाणु कार्यक्रमों के विकास से समझौता किये बगैर हो सकेगी।
5– इससे भारत के राजनीतिक रुतबे में बृद्धि होगी और अमेरिकी कूटनीति से भारत सुरक्षा परिषद की स्थाई सदस्यता शीघ्र प्राप्त कर सकेगा।
6– इससे शक्ति राजनीति के क्षेत्र में भारत एक मजबूत और कुशल खिलाडी के रुप में उभरेगा।
7–इससे भारत के परमाणु संयंत्रों की ताला बन्दी भी टल जायेगी और परमाणु ईधन भी मिलने लगेगा।

शोध–प्रविधि - प्रस्तुत शोध कार्य भारत अमेरिका परमाणु संबन्धः भारत अमेरिका परमाणु समझौता एवं भारतीय विदेश नीति के सन्दर्भ में एक अध्ययन के अन्तर्गत अनुसूची विधि और निरीक्षण प्रविधि का प्रयोग किया जायेगा।

इसके अतिरिक्त अध्ययन संबंधी द्वितीय तथ्यों को विभिन्न शोध प्रबंधों, गजेटियर, शोध पत्रिकाओं एवं समाचार पत्रों से व तथ्य अवलोकन, साक्षात्कार, अनुसूची, प्रश्नावली, प्रोजेक्टिव तकनीक, केस अध्ययन विधि, एकत्रित्र व प्राप्त करने का प्रयत्न किया गया है। यह शोध–पत्र पुस्कालय अध्ययन, तथ्य संग्रह, तथ्यों का विश्लेषण, एवं पर आधारित है।

उद्देश्य–

1– इस शोध कार्य के द्वारा भारत अमेरिका परमाणु संबन्ध, भारत अमेरिका परमाणु समझौते के भविष्य में होने वाले परिणामों एवं भारतीय विदेश नीति व इससे संबंद्द भारतीय हितों को जानने का प्रयास किया गया है।

eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Vol. 01, Issue 02, Jan 2022

2– उन नवीन तथ्यों को भी जानने का प्रयास किया गया है कि भारत किस प्रकार से भारत अमेरिका परमाणु संबन्ध के द्वारा अपनी अर्थव्यवस्था को गतिशील बनाये रख सकता है।

3– अंतर्राष्ट्रीय जगत को किस प्रकार प्रभावित करेगा और भारत अमेरिका परमाणु संबन्ध से किस प्रकार भारत को सुरक्षा परिषद की स्थायी सदस्यता प्राप्त करने में सहायता मिल सकती है।

4– इस प्रकार प्रस्तुत शोध कार्य भारत एवं अमेरिका दोनों के लिये लाभकारी तथ्यों की खोज के साथ–साथ उन तथ्यों को भी खोजने का प्रयास कर रहा है जो कि सम्पूर्ण वैश्विक परिदृश्य को प्रभावित करेंगे।

5– जनमानस में चर्चा है कि भारत अमेरिका परमाणु संबन्ध से भारत को एक परमाणु शक्ति के रूप में मान्यता प्राप्त हो रही है।

6– भारत अमेरिका परमाणु संबन्ध से विश्व में भारत का सामरिक महत्व बढ़ेगा।

परमाणु करार के संदर्भ में यह तथ्य भी उल्लेखनीय है कि–

1– वैकल्पिक स्वदेशी परमाणु संभावनाएं क्या हैं?
2–अमरीका के साथ परमाणु समझौता करने से हमें क्या अतिरिक्त लाभ मिल रहा है?
3– इस कथित अतिरिक्त लाभ के ऐवज में हम अपने ऊपर क्या–क्या बंदिश स्वीकार कर रहे हैं?
4– परमाणु करार का हमारी अर्थव्यवस्था पर क्या असर पडेगा ? इस लाभ हानि का जायजा लिया जाये।
5–निकट भविष्य में परमाणु क्षेत्र की अर्थव्यवस्था में क्या भूमिका रहेगी?
6–भारत–अमरीका परमाणु करार किन–किन क्षेत्रों में और किस हद तक हमारी संप्रभुता को खण्डित अथवा सीमित करता है?
अभी तक इनका पूर्ण एवं सही आकलन नही हुआ है।

भारत–अमेरिका असैन्य परमाणु समझौते से भारत की आवश्यकताओं में काफी बदलाव आया है। साथ ही भारत को रूस के एटमस्ट्रॉयएक्सपोर्ट (Russia*s AtomstroyeÛport) के साथ अपने मौजूदा समझौते से भी काफी राहत मिली है। एक अन्य मुद्दा उस लागत से संबंधित है जिसे भारत विदेशी सहयोग के माध्यम से परमाणु ऊर्जा के लिये भुगतान करने हेतु तैयार है।

वर्ष 2008 के समझौते के बाद से अमेरिका द्वारा भारत को परमाणु रिएक्टरों की बिक्री पर चर्चा की जा रही है, इसके बाद के दो समझौतों पर केवल वर्ष 2016 और वर्ष 2019 में हस्ताक्षर किये गए थे। ऐतिहासिक परमाणु समझौते (2008) के बावजूद असैन्य परमाणु सहयोग आगे नहीं बढ़ा है। अंतर्राष्ट्रीय राजनीति में न कोई स्थायी मित्र होता है और न ही कोई स्थायी शत्रु केवल स्थायी हित होते हैं। ऐसे में भारत को रणनीतिक हेजिंग की अपनी विदेश नीति को जारी रखना चाहिये। 21वीं सदी में विश्व व्यवस्था को आकार देने के लिये भारत–अमेरिका संबंध महत्त्वपूर्ण हैं।

दोनों सरकारों को अब अधूरे समझौतों को पूरा करने का प्रयास करना चाहिये और व्यापक रणनीतिक वैश्विक साझेदारी के लिये पाठ्यक्रम निर्धारित करना चाहिये। वर्तमान विश्व में नाभिकीय ऊर्जा को परंपरागत ऊर्जा का श्रेष्ठ विकल्प माना जा रहा है और नाभिकीय तकनीक का प्रयोग सैन्य

eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Vol. 01, Issue 02, Jan 2022

विस्तार की अपेक्षा शान्ति पूर्ण उद्देश्यों के लिए अधिकाधिक हो रहा है। परमाणु शक्ति के गैर सैनिक उपयोग में कृषि, उद्योग व चिकित्सा के क्षेत्र प्रमुख रूप से शामिल हैं। लेकिन फिर भी वैश्विक जनमानस में नाभिकीय तकनीकि के विध्वंसक स्वरूप का भय भी व्याप्त है, तब भारत भी परमाणु ऊर्जा का गैर सैनिक उद्देश्यों हेतु उपयोग करना चाहता है, क्योंकि भारत परमाणु शक्ति की विनाशकारी प्रवृत्ति के कारण परमाणु ऊर्जा के सामरिक प्रयोग का विरोधी है।

अन्तर्राष्ट्रीय मंचों पर तमाम सफलताओं और सराहनाओं के बावजूद परमाणु सहयोग के मामले में भारत अलग–थलग पड़ा हुआ था। यह स्थिति लम्बे समय तक जारी रहना भारत के लिए शुभ नही थी। क्योंकि भारत की ऊर्जा आवश्यकताएं बढ़ती ही जा रही हैं। भारतीय अर्थव्यवस्था जिस तरह, जिस गति से बढ़ रही है। उसे देखते हुए भारत को ऊर्जा के मामले में आत्मनिर्भरता प्राप्त करना आवश्यक हो गया है। वह भी पर्यावरणीय तथ्यों को ध्यान में रखकर।

भारत अमेरिका परमाणु संबन्ध से नाभिकीय ईंधन व नाभिकीय सयंत्रों में प्रयुक्त होने वाले उपकरणों इत्यादि के निर्वाध कारोबार की संभावनाओं, परमाणु विद्युत परिदृश्य सुधार कर सहभागी बनाने, एक ध्रुवीय शक्ति अमेरिका से मधुर सम्बन्ध एवं वैश्विक मंच मे भारत की प्रतिष्ठा में वृद्धि एवं राष्ट्रीय हितों की पूर्ति सुनिश्चित होनें की अत्यंत संभावना है। फिर भी समग्र भारत एवं विश्व में एक संशय की स्थिति बनी हुयी है कि भारत अमेरिका परमाणु संबन्ध के भविष्य के क्या परिणाम होंगें। भारत अमेरिका परमाणु संबन्ध दोनों देशों के राष्ट्रीय हितों, विदेश नीति एवं संप्रभुता के लिए कितना अनुकूल तथा प्रतिकूल होगा।

विशेष रूप से भारत की ऊर्जा आवश्यकताओं, विदेश नीति एवं संप्रभुता के सन्दर्भ में यह भी उल्लेखनीय होगा कि वह अन्तर्राष्ट्रीय व्यवस्था को किस प्रकार प्रभावित करेगा। यह परमाणु प्रौद्योगिकी और सामग्री के अनियमित प्रसार एव विस्तार को सीमित करने में मद्दगार साबित होगा या नही। क्योंकि यह विषय भारत के राजनैतिक, आर्थिक एंव अप्रत्यक्ष रूप से सामरिक महत्व का भी है।

उपर्युक्त विवेचन करार को भारतीय उर्जा हितों की पूर्ति करता प्रतीत होता है। लेकिन करार में भारत को ईंधन आपूर्ति की कोई गारंटी नही मिली बल्कि आश्वासन ''राजनीतिक प्रतिबद्धता'' है। इसकी कानूनी बध्यता नही है तथा भारत को पुनः प्रसंस्करण का अधिकार भी नही है। यह भारत अमेरिका परमाणु संबन्ध कहीं ना कहीं अमेरिकी कानूनों पर निर्भर है।

eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Vol. 01, Issue 02, Jan 2022

सन्दर्भ सूची–

- व्योम शंकर श्रीवास्तव, भारत का परमाणु परीक्षण तथा उसकी परमाणु नीति, नार्दर्न बुक सेंटर, नई दिल्ली 2009 ISBN 8172110316, 9788172110314,
- दीक्षा विष्ट, स्वाधीन भारत में विज्ञान और प्रौद्योगिकी, पीतांबर पब्लिकेशन करोल बाग, दिल्ली 1998 ISBN 8120910672, 9788120910676,
- डा0 दयाशंकर त्रिपाठी, पर्यावरण अध्ययन, मोती लाल बनारसी दास पब्लिकेशंस नई दिल्ली 2007, ISBN 8120827503, 9788120827509,
- सुबोध कुमार गुप्ता, परमाणु शस्त्र एवं विश्व शांति, राधा पब्लिकेशंस नई दिल्ली 1992–2007,
- इगोन लार्सन एवं धीरेंद्र अग्रवाल, परमाणु उर्जा (Hindi Version of: Atomic Energy), आत्माराम एंड संस नई दिल्ली 2008 ISBN 8179010406, 9788179010402,
- रमेश चद्र कपूर, परमाणु बिखंडन, कैलिफोर्निया विश्वविद्यालय अमेरिका 1962–2007,
- तपन विस्वाल, अंतर्राष्ट्रीय संबंध, मैकमिलन पब्लिकेशंस नई दिल्ली 2009 ISBN 0230327877, 9780230327870,
- जसजीत सिंह, भारतीय परमाणु शस्त्र, प्रभात प्रकाशन नई दिल्ली 2009, ISBN 8173152896, 9788173152894,
- हुसैन, भारत का भूगोल, Tata McGraw-Hill Education delhi 2011 ISBN 0070702853, 9780070702851 पृष्ठ 18–7
- वीरेंद्र कुमार चौधरी, भारत का दूसरा परमाणु परीक्षणः हिंदी समाचार पत्रों का सर्वेक्षण, अकादमिक प्रतिभा प्रकाशक नई दिल्ली, 2006 the University of Michigan page 73-86
- INDO-U.S. CIVIL NUCLEAR DEAL,EDITED. RAHUL BHONSLE, VED PRAKASH AND K.R. GUPTA NEW DELHI, ATLANTIC, 2007, 2 VOLS., XXVIII, ISBN9788126912766
- INDO-U.S. CIVIL NUCLEAR DEAL] HARI SUUD, NEERAJ KUMAR, NAM CHAMSKI, PREM SHUKLA, DEV DATTA, ANIL RAGHURAJ, ALOK TOMAR, –BY..www.visfot.com & ATLANTIC PUBLISHERS, NEW DELHI 2006-2007,ISBN 8126907142
- Indo-Us Nuclear Deal, K.K. Parnami, Daya Publishing House,delhi 2009 ISBN 8131602494, 9788131602492,
- BJP INDIA, Indo-US Nuclear Deal: Why Does BJP Oppose It?, Bharatiya Janata Party, 2008,
- India's Foreign Policy, Anjali ghosh, Pearson Education India, 2009, ISBN 8131710254, 9788131710258,
- Delhi Policy Group, Nuclear Policy Stewardship Project, Nuclear Threat Initiative, India-U.S. Nuclear Deal: Prospects & Politics, Delhi Policy Group 2007 Original from the University of California 2011, ISBN 8187206217, 9788187206217,
- दैनिक जागरण
- हिन्दुस्तान
- अमर उजाला
- राष्ट्रीय सहारा
- नवभारत टाइम्स

eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Vol. 01, Issue 02, Jan 2022

- दैनिक भास्कर
- योजना
- परीक्षा मंथन
- इंडिया टुडे
- भारत 2012
- भारत 2013
- शुक्रवार
- आउटलुक
- The Times Of India
- The Hindu
- The Hindustan Times
- Economic And Political Weekly